धर्म के बाद भी

(बदलता नया युग)

लेखक : ओम वी.बी.

लेखक के कलम से ,

जरुरते कहानियां बदल देती है , जीवन तो वहीं है । पुस्तक लिखने का मकसद यह है , की धर्म में उलझे ना रहो यह संदेश देने की कोशिश की है । मेरा एक दोस्त है , उसे धर्म ने अंधा बनाया उसे समझने की कोशिश करने की बजाय वह खुद उस जंजाल में फसता ही जा रहा था। अफसोस उसे समझाना मूर्ख को समझाने के बराबर था। शायद उसने समझा भी या नहीं , पर हमारी इस मूर्खता का फायदा सरकार , सत्ताधारी लोग उठाते है। मैंने आज तो उसे समझाया पर क्या पता उसकी मूर्खता कब जन्म ले। मुझे किसी से कोई सर्वोकार नहीं है , निवेदन रहेगा हर व्यक्ति से की कृपया कर अंधे भक्त होकर किसी का समर्थन करना जीवन की इससे

बड़ी भूल और क्या हो सकती है ? मैं आशा करता हूं , कि आप मेरे बातों पर राजी होंगे । मानना मत , मेरे विचार पर विचार करना। हो सकता है , मेरी बाते गलत हो। पर तुम स्वयं निर्णय लेना उचित का चयन करना। अगर आपने इस किताब से ढंग कि दो बातें जान ली हो तो समझ लेना मेरा किताब लिखने का कार्य सफल हुआ। शायद मेरी बोली , शब्द कड़वाहट भरे होने के कारण हर किसी के लिए नहीं बने है अगर तुम इनको पी पाए तो तुम सच्चाई के प्यासे थे। मेरे विचारो कि पूर्ति तब ही पूरी होगी जब इससे किसी के जीवन में सही रास्ता दिखाने का कार्य संपन्न होगा।

Om VB

तर्क से वितर्क तक

जीवन और धर्म को अलग अलग रखकर देखा जाए तो असल अर्थ कहना सरल हो जाएगा कि धर्म क्या है ? और जीवन क्या है ? "धर्म वह है जो जीवन जीने के लिए मार्ग दिखाता है , जीवन वह है , जो सफर में भी और सफर के अंत में भी कायम है।" आवश्यक नहीं है कि धर्म हो ही , नहीं होगा तो भी कहीं मनुष्य को हानी होनी नहीं है। पर केवल धर्म के नाम पर किसी को अज्ञान के कारण ठगना क्या यह उचित है ? तुम्हारा धर्म नया कुछ नहीं सिखाना चाहता सब वही पुराने गड़े पुराण , ग्रंथ है । नया क्या सीखोगे ? कुछ लोग होंगे वो तर्क का सहारा लेकर नई कहानियां बनाएंगे । ये लोग तुम्हारे डर का फायदा उठाते है। केवल रचना इतनी अच्छी कर रखी है कि भावार्थ का तो पता

नहीं पर चेतना को मारने का काम जरूर होता है। क्या छोड़ो क्या लों ? यह आपकी इच्छा , आपके विचार के दार्शनिक ता पर निर्भर करता है। मेरा मानना सदैव रहा है , इंसान में परमात्मा धूंडो कड़वे घुट भी मीठे लगने लगेंगे । जिन्दगी की कड़वाहट ही कुछ ऐसी है कि अच्छे से अच्छे आदमी को बुरा बना देती है। धर्म बुरा नहीं है बस क्रोध उन बेबस , मासूम लोगों का है जो कट्टरपंथी हों जाते है , बड़ी दया आती है उन लोगो पर जो किसी के भी बहकावे में आ जाते है। कितने भोले है वे लोग , अज्ञानी कहना ही ठीक होगा , धर्म के नाम पर लड़ना क्या यह मूर्खता भरा नहीं है ? अगर धर्म ही तुम्हारे लिए सबकुछ बन चुका है तो ठहरो भाई कहा जाना चाह रहे हो। बड़ी मूर्खता मालूम पड़ती है उन लोगो से जो अज्ञान ता को हटाना नहीं चाहते । पूछो उनसे जो तुम्हे बहलाते हो , भड़काते हो , घृणा निर्माण कराते हो , जरा रुख कर उनसे पूछ लो कि इससे हित क्या है ? तो जवाब यहीं मिलेगा कि धर्म

हमारा श्रेष्ठ बन जाएगा। चारो और हमारे ही धर्म के दिंडोरे पिटे जाएंगे।
अब यह भी तो पूछो कि तुम्हे (स्वयं को) क्या फायदा है ? कोई भी सरलता से जवाब मिलना मुश्किल है। बहुत लोग मिल जाएंगे ध्यान भटकाने के लिए तुम्हे संभलकर रहना है उनसे डरो नहीं , बस सतर्क रहना है।

वो दिन दूर नहीं है।

स्वातंत्र्य का नामो निशान छीन लिया जायेगा वो दिन दूर नहीं है। अगर चाहते हो कि ऐसा हो नहीं तो सबसे पहले उनसे बचे जो संघटना बनाके घृणा का निर्माण करा रहे है। धर्म के नाम पर दंगा फसाद करने वाले अलग और उन्हें प्रेरणा देने वाले अलग बस बिकता वहीं है जो दिखता है। जो लोग दंगा फसात को प्रेरणा देते है वे उतने ही गुन्हेगार है जितने दंगे करने वाले। प्रेरणा देने वाला अक्सर छुप जाता है , कोई कायर ही होगा । अपने - अपनो में (आपस में) भी झगड़े करने के लिए इनका ही हाथ होता है फर्क इतना है कि जब धर्म का चलन खत्म होगा तो असहाय जनता ही उनका निशाना रहेगा , सत्य है कल हुआ था कल भी होगा आज जागो तुम्हे अपने धर्म का रक्षक बनने की जरूरत नहीं है , वह खुद अपनी रक्षा करेगा मानते होना कि जब जब धर्म खतरे में होता है तब तब ईश्वर

प्रकट होता है , यह सब झूट है अगर ऐसा कुछ होता तो तुम और मेरे जैसे लोग धर्म का समर्थन क्यो करते ? कुछ तो गड़बड़ है। सत्ता , पैसा गलत इंसान के हातो में आ जाए तो स्वतंत्रता और मानवी जीवन को दिक्कत होने लगती है, होनी ही चाहिए मूर्ख व्यक्ति का निर्माण रुखने के लिए यह काफी है । मेरा देश आज भी लगता है कि सोया हुआ है। कभी भी इंसान वह नहीं बोलता जो उसके जहन में होता है , वह सारा झूट , बकवास ही करता रहता है। भीतर कुछ अलग और बाहर कुछ अलग ऐसी स्तिथि मनुष्य कि है , यह सारा निर्माण हुआ है , बौद्धिक विकास से होना तो चाहिए पर जितना मनुष्य ज्ञानी हो जाता है वह उतना ही चंचल , अहंकारी , झुठा और स्वार्थी बन जाता है। अवश्य चंचल बनो , निस्वार्थी बनो तुम जब तक सिर्फ अपने लिए जीना चाहोगे मजा नहीं आयेगा , तुम्हारी मुस्कान दूसरो से जुड़ी है। त्याग दो उनके लिए जो स्मरण रखने को कायम है । विरोध करना है तो उनका करो जो झुटे है ,

मक्कार है , गद्दार है। हम आज के लिए नहीं कल के लिए जीते है यहीं सत्य है केवल इसी दैनिक के राह से तुम अंधे हो गए हो , तुम हर किसी से प्रभावित बहुत जल्दी हो जाते हो , विचार करो कि वह आदमी क्या कहता है क्या राज है , सत्य क्या है ? अपने आप से कभी पूछोगे भी। डरा या जाता है ना!

तुम धर्म का स्वारस्य करते करते मिट जाओगे , पर होगा कुछ नहीं। तुम्हे क्या लगता है कि आज जो बाबा वैगेरा कहो या फिर संत कहो उन्हें प्रसिद्धि अकारण मिली है , नहीं , तभी मिली है जब उन्होंने लोगो के मन में प्रकाश डाला यदि कोई ठगता है तो उसका अंत निश्चित है। बहुत कम लोग है जो खुलकर सच कह पाते है। सच कड़वा होता है इससे दिक्कत होती है उन सबको जो धर्म के प्रचारक , प्रसारक है। और सच्चे आदमी से इन्हें बहुत खतरा मालूम पड़ता है। कभी कोई कबीर , बुद्ध , क्रायिस्ट पैदा हुआ है जो मनुष्य को सच्चाई का मार्ग दिखाने हेतु निर्माण हुआ है

उसका तिरस्कार ही हुआ है, अवहेलना कियी जाती रही है । कोई भला ही आदमी होगा जो इस जंजाल को त्यागता है।

जब बुद्ध जैसा मनुष्य धरा पर जन्म लेता है या कराइस्ट जैसा कहो , उनके लिए किसी समस्या कि जरूरत नहीं होती वह स्वयं समस्या है , लोगो की , समाज की , पाखंड की , व्यापार की । पाखंड वादियों को बड़ा खतरा है, डर है। क्योंकी खतरे में तो उनका धर्म चला जाएगा , कोई खतरा नहीं है धर्म को धर्म को खतरा है पाखंडवाद से , बुरे लोगो से है , धर्म के ठेकेदारों से है। जब बुद्घाजिवी निर्माण होते है तो इनके पास उनके प्रश्नों के जवाब बिल्कुल नहीं होते। होंगे भी नहीं , सब रटा रटाया है। पूछो उनसे तुमने क्या जाना? आज भी तुम अपनी समस्या गीता , बाइबिल , कुरान में ढूंढते हो। क्या यह मूर्खता नहीं है ? नई राह है , नया सफर है , नई उम्मीद है और ज्ञान वहीं पुराना , पुराने ही प्रश्नों का इस्तमाल कर सीधे सीधे तुम अपने जिज्ञासा को मार नहीं रहे हो? पूछो भी

शरमाओ नही , स्वयं से सच कहो कोई सुनने वाला नहीं है , कोही सुनाने वाला नहीं है। स्वीकार करो अपनी भूल को , खत्म करो पुराने को , नए का आदर करो स्वीकार करो। त्याग दो नाकाम राहों को स्मरण करो अंतर आत्मा को , तुम एक दैवीय शक्ति हो , बस अहंकार को खत्म करो वरना कुछ बचने लायक नहीं रहेगा । मन चंचल है , सुनेगा नहीं तुम्हे उसे रोकना नहीं है , सत्य के द्वार उसे दिखाओ , परमात्मा की लालसा लागाओ । उसके लिए ध्यान की आवश्यकता होती है , आंखे मिटनेसे कोई सुख , शांति , परमात्मा मिलने वाला नहीं है। ध्यान क्या है ? ध्यान एक लक्ष्य है अपने कार्य के प्रति आस्था रखना यह भी ध्यान है। तुम ध्यान को मौन कहो या फिर निशब्द कहो फर्क पड़ने वाला नहीं है। लक्ष्य ही ध्यान है ऐसा मेरा मानना है। जो तुम्हे कार्य पसंद है उसे करना उसमे भी परमात्मा है क्योंकि वहा आनंद है , प्रेम है अर्थात परमानंद है।

मंदिर बने है एकत्रित आने के लिए , भगवान के लिए नहीं पर सारा उल्टा देखने को मिलता है। भगवान कल भी बहाना था आज भी है , तुम ठगे जा रहे हो , बिके जा रहे हो जरा समझो भी कि जो अपने है ऐसा कहते है , उन्होंने आज तक क्या किया है ? दूसरो के लिए नहीं तुम्हारे लिए तुम्हारे कस्बे के लिए , गाव के लिए। मैं किसी परिवार कि बात नहीं कर रहा राजनीति कि बात कर रहा हूं। श्रेष्ठ के लालसा में तुम अपनो को खो दोगे , मनुष्य प्राणी को खो दोगे। आज का विज्ञान इतना प्रबल है कि एक अनुविस्फोट सारी धरती (धरा) को खत्म कर देगा। मेरा तुम्हारा अस्तित्व एक चिटी जैसा है इस ब्रम्हांड में , ऐसा वो सोचता है जिसे स्वयं का अस्तित्व का पता है। सोचने की हमारी जो प्रवृत्ति है इसी से जिज्ञासा निर्माण होती है , जरूरत है इसके उपयोग में लाने की।

क्या समझे??

मनुष्य सोशल ह्यूमन बेइंग है , समाज में रहने वाला प्राणी है। सब जो उसने बनाया है उसका निर्माण मनुष्य हित के लिए ही हुआ था। पर जैसे जैसे वक्त गुजरता गया पाखंड पंडित , भोंदू , स्वार्थी लोगो ने अपनी मन गढ़न कहानियां बनाई , इश्वर की झुटी आस्था दिखाकर अज्ञान का फायदा उठाया। जाती प्रथा , वर्ण भेद जैसे अनगिनत झूट बोल कर लोगोंको फसाया , जिससे लोगो में विरोध का सामना न करना पड़े इसलिए इन व्यस्था को निर्माण किया (पाखंडी धर्मगुरु ने)। क्यो ? तुम्हे किसी कहानी को पढ़कर ऐसा महसूस नहीं होता कि वह सत्य थी। होता है ऐसा प्रतीत ? तब भी जब कि किताब के शुरू में ही बताया जाता है कि यह सारी कहानी काल्पनिक है। तो तुम क्यो अभी कहानियों में उलझे हो ? क्यो अभी भी वहीं रूखे हो ? इसका सरल और बड़ा सादा जवाब है , तुम उससे छूटना नहीं चाहते

धर्म की जरूरत क्यो ?

धर्म बना है , साथ रहने के लिए , जुड़ने के लिए , प्रेम भाव निर्माण करने के लिए। क्यो ? यहीं सब रीजन है , कारणों की वजह है । मैं समर्थन करता

हूं वैदिक जीवन काल का , क्योंकि में भारतीय हूं। पर में उनका विरोध करता हूं जो मानवता के खिलाफ है । रूढ़ि परंपरा का सही मायने में अर्थ ना जानकर भी उसे पाखंड की तरह मानना मूर्खता पूर्ण होगा। तर्क को समझो सच जानों , मानो नहीं वरना तुम भी मूर्ख हो जाओगे। स्वयं इसपर विचार करे।

सभी धर्म अहिंसा को मानते है पर फिर भी क्या उनमें हिंसा देखने को नहीं मिलती। exception कि बात नहीं हो रही है। नासमझ रह जाते वह लोग जो पाखंड को छोड़ना ही नहीं चाहते। पाखंड शब्द का प्रयोग ही बार बार क्यो कर रहा हूं ? पाखंड से बड़ा खतरा मनुष्य को किसी का नहीं। हर तरफ खतरा है और इस खतरे से बचने के लिए लोगो को एक साथ मिलाफ करने के लिए धर्म के बीज को बोया है। जिससे मनुष्य अपना सारा क्रोध , अहंकार , द्वेष , ईर्षा , मोह को त्याग कर एक जुट हो जाए साथ रहे और एक दूसरे के जीवन के प्रश्न को हल करे यहीं धर्म का काम था।

जिसका स्वरूप राजव्यवस्था ने ले लिया था। इसी कारण ही वहा के नियोजन और राजनीति का अवसर धर्मगुरु को मिलते चला गया। धर्म की बात सामाजिक नहीं रही , तो यह राजनैतिक बात बन गई , सोचो आज भी ऐसा होता है या नहीं ? यह तभी संभव है जब सत्ता चालक ही उनके आवेग (साइड) से हो।

जरूरत धर्म की नहीं मनुष्यता (मानवता) कि होनी चाहिए। हालांकि धर्म का दर्जा बहुत बड़ा , विशाल , महाकाय है। कारण इसका एक ही है , डर "जब तक आदमी डरेगा मंदिरों में पैसा लाखो चढ़ाएगा।" बात पैसे कि नहीं मूर्खता कि है , अज्ञान की है। निष्ठा हो , अवश्य हो पर किसपर समझ तो लो कि धर्म कहता क्या है ? संस्कार दो अपने बच्चो को उलझाओ नहीं अपनी तरह उन्हें भी , हो सकता है उनकी शुरुवात आपके जैसे ही हो पर उन्हें भ्रमिष्ट , मूर्खो से , लोभियों से बचने के लिए सौ नुस्खे देना जरूरी है। बचना इसलिए है क्योंकि वह अपनाही बचाव नहीं बल्कि अपने

आसपास वालो को भी बचा पाए । धर्म की व्याख्या पहले ही कर दी है , और बाकी कचरा ज्ञान तो आपको पहले ही पता होगा। इसके बारे में नहीं बताना चाहता । कचरा ज्ञान क्या है , धार्मिक ज्ञान ही कचरा ज्ञान है। क्योंकी तुम उसे छोड़ने को राजी नहीं हो , तुम्हे उसका लोभ , लालसा लगी है , लत लग चुकी है। आसानी से नहीं छूटेगा क्योंकि तुम जो परमानन्द के लिए किए जा रहे हो उसका त्याग अर्थात छोड़ना भी जरूरी है। जब उसका रस , स्वाद कड़वा। , खट्टा हो गया फिर भी तुम चिपके हो क्या वह कचरा नहीं कहलाता है ? बोलो !!

थोड़े पर राजी मत होना , तुम्हे इश्वर से ही लगन हो , निष्ठा हो , प्रेम हो बाकी सारा खट्टा है , कचरा है। धर्म के ठेकेदार कोई मार्ग दाता नहीं है , इश्वर को पाने का कोई शॉर्टकट नहीं है। अंधे भक्तो से मुझे सदैव पीड़ा हुई है। बिना कुछ जाने इश्वर , परमात्मा को चाहना प्रेम कहलाता है और अपने भलाई के खातिर जो चाहता है वह उत्पीड़न।

क्योंकी इनके लिए हि बने है बुआ बाबा , धर्मगुरु , पाखंड पंडित । ईश्वर से कोई सरवोकर नहीं है इन्हे लूटना ही उनका धंधा है(पाखंड पंडितों का)। तो भोले , बेचारे अंध भक्त ही लूटे जा रहे है , पीड़ित हो रहे है , राहो से भटक रहे है।
धर्म की जरूरत है मानव हित के लिए , आपसी प्रेम के लिए , संस्कृति की नाल को (दौर को) जिंदा रखने के लिए ।

धर्म से आतंगवाद

एक ही घर में भाई भाई में झगड़ा कब होता है??, जब उन्हें समझाने वाले भी झगड़े में शामिल हो जाते है। उन्हें उसके बाद क्या होगा इसका खयाल नहीं आता वे अपने अहंकार को बढ़ावा दे रहे है , और इसमें झगड़ा कौन लगा सकता या फिर कौन लगाता है ? तो जवाब मिलेगा पत्नियो से , माता से , पिता से या अपने ही बच्चे से । क्यो वे खुद इस मसले को सुलझा नहीं सकते अकारण होने वाला या कहो अनकहे जाने वाले दुर्घटना से वे परिचित नहीं थे । शायद ही उन्हें इसका एहसास हुआ होगा , मेरा देश , मेरा मुल्क भी कुछ ऐसी ही परिस्थिति में है। भाई इस लिए लड़ रहे है क्योंकि उनके हि बच्चे अलग घर बनाना चाहते है।
पर यह घर होगा धर्म का और इसका जो कुछ भी परिणाम होगा उसका सीधा असर साधारण , गरीब , असहाय लोगो को होता है।

इसलिए ज्यादातर यह युद्ध बड़ा भयानक रूप ले लेता है। मेरा मुल्क, मैं और वो में बट ने का स्वरूप देखने के लिए नहीं बना है। क्या शिकायत है आपस में ? चर्चा करो , चर्चा से सुलझाने कि कोशिश करो।

चर्चा के लिए धर्मगुरु नहीं बल्कि ज्ञानी लोगो की सहायता ले । मेरे नजर में ज्ञानी वह है जो किताब से परे है , जब तक किताब में ही अड़े रहोगे तुम सामाजिक प्रश्नों को हल नहीं कर पाओगे। आइंस्टान जैसा साइंटिस्ट मिल पाना असम्भव है पर अक्सर वे जिन्दगी के गणित को समझ नहीं पाते। यह बात अलग है कि उनकी तुलना करना उचित नहीं है , उनका उदहारण लिया इस लिए क्योंकि जो लोग किताबो के गणित को समझते है , अक्सर वे लोग जिन्दगी के गणित को समझ नहीं पाते।

धर्म आतंकवाद को कैसे निर्माण करता है ? धर्म की संघटना ही धर्म के आतंकवाद को निर्माण करती है। विरोधा भास यह भी कहेगा की , धर्म

संगठना झुटी है ? तुम ऐसा कैसे कह सकते हो ? हमारे बारे में जानते क्या हो ? आदि इत्यादि।
जानने की आवश्यकता अनजान को होती है पहचान वालो को नहीं , मेरे देश में जहां बेरोजगारी , भूकमारी जैसी समस्या को दबाने के लिए धर्म का सहारा लिया जाता है। क्या यह अन्याय नहीं है ? बिकते क्यो हो दो कौड़ी के पैसों के लिए ? कल मर रहे थे तब नहीं पूछा हालचाल आज वोट के लिए आकर खड़े हो गए दरवाजों पर दस्तक दिए ऐसे सवाल करे जनता के हक के लिए लड़ने वाले बीन कामी कर्मचारी से। पांच साल तक तो उन्हें याद भी नहीं आती , और यहीं लोग धर्म का नाम लेकर इलेक्शंस जीतते है। इनका काम कुछ नहीं है बस बाकियों को नीचा ठहराना है , मतभेद करवाना है। सामाजिक प्रश्न को भी देखो क्या तरक्की की है तुम् सवाल तो पूछो तुम्हे पूछने की आजादी मिली है पर पैसा ही प्यारा है तुम्हे कैसे पूछोगे? इसका पूरा असर असहाय जनता पर

होता है। क्यो बेचारे बेबस लोग ही सहे ये पीड़ा , क्यो आखिर क्यो ?
और यही लोक है जो धर्म का पताका सरपर बांधे है राजनीति के लिए , सत्ता के कुर्सी के लिए । यहीं वह आतंगवादी है। सफेद (white) कुर्ते में छुपा हुआ व्हाइट कोलर आतंगवादी फर्क इतना है कि इसिस जैसी आतंगवादि संस्था से तो बचा जाएगा भारत पर उनसे कैसे बचा जाए, जो हमारे पास में ही है ? यह सवाल आपसे।